उपखंड-III: फ्राँस की क्रांति (1789-1815 ई.)

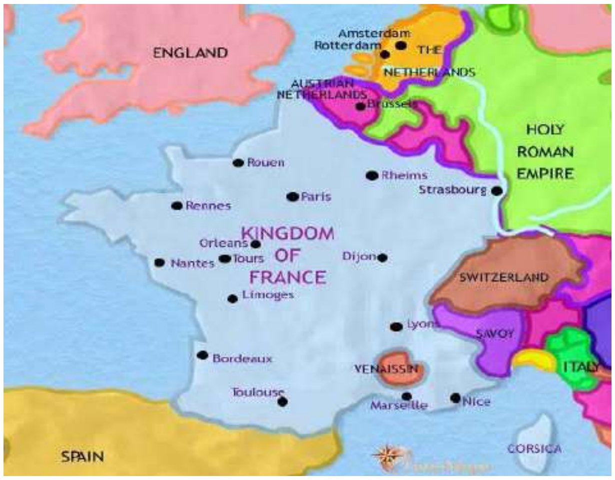

■ **पृष्ठभूमिः**

- फ्राँस की क्रांति न केवल यूरोप के इतिहास में, अपितु विश्व इतिहास में एक विभाजक रेखा बन कर आती है। मध्य युग से आधुनिक युग की ओर परिवर्तन की जो प्रक्रिया पुनर्जागरण तथा धर्म सुधार आंदोलन के साथ आरंभ हुई थी, वह फ्राँस की क्रांति के साथ लगभग पूरी हो गई। एक दृष्टि से फ्राँस की क्रांति अमेरिकी क्रांति की अगली कड़ी थी। जहाँ एक तरफ अमेरिकी क्रांति ने इसे वैचारिक समर्थन दिया, वहीं दूसरी तरफ अमेरिकी मध्य वर्ग की जीत ने फ्राँसीसी मध्य वर्ग को एक नवीन चेतना प्रदान की। यह अपने विस्तार, प्रभाव, तीव्रता तथा व्यापकता में अमेरिकी क्रांति से कहीं आगे निकल गई। इसका दीर्घकालीन प्रभाव न केवल यूरोप, वरन् संपूर्ण विश्व में महसूस किया गया। यह क्रांति युद्ध, आंतरिक हिंसा एवं तानाशाही जैसी कई अवस्थाओं से गुज़रकर आगे बढ़ी।
- बताया जाता है कि फ्रांस की क्रांति उन प्रश्नों का भी जवाब थी जो 1789 से पहले यूरोप के समक्ष उपस्थित थे। ये प्रश्न थे- राजतंत्र और कुलीन वर्ग के बीच संबंधों की समस्या, राजतंत्र एवं मध्यम वर्ग के बीच संबंधों की समस्या, कुलीन वर्ग एवं मध्यम वर्ग के बीच संबंधों की समस्या तथा मध्य वर्ग एवं निम्न वर्ग के बीच संबंधों की समस्या। फ्रांस की क्रांति ने इनमें से अधिकांश प्रश्नों का हल ढूँढ़ने का प्रयास किया था, केवल अंतिम प्रश्न अनुत्तरित रह गया था, जिसका उत्तर आगे रूस की बोल्शेविक क्रांति ने देने का प्रयास किया था।

■ **अमेरिकी क्रांति से प्रेरणा कैसे मिली?**

- फ्राँस की क्रांति को अमेरिकी क्रांति से निम्नलिखित रूप में प्रेरणा मिली-

1. अमेरिकी क्रांति में ब्रिटेन के विरुद्ध हिस्सा लेने के लिए फ्राँस की सेना अमेरिकी उपनिवेश में भेजी गयी थी। वहाँ से वह क्रान्ति के विचारों से प्रभावित होकर वापस लौटी।
2. अमेरिकी क्रांति अमेरिकी मध्यवर्ग की जीत थी। इसने फ्राँस के मध्यवर्ग की आकांक्षा को भी बढ़ा दिया।
3. फ्राँसीसी सरकार की आर्थिक दशा पहले से ही खराब थी। फिर, अमेरिकी क्रांति में हिस्सा लेने के कारण उसकी अर्थव्यवस्था संकट का शिकार हो गयी। फिर फ्राँस का आर्थिक संकट फ्राँसीसी क्रांति का तात्कालिक कारण बना।

■ **फ्रांस की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ, जो क्रान्ति में घटित हुईं:**

- **राजनीतिक स्थिति-** फ्राँस के शासक अपने निरंकुश अधिकारों का दावा करते थे। हालाँकि फ्रांस के शासक लुई 14वें ने निरंकुश राजतंत्र को स्थापित किया था, किंतु उसके काल में क्रांति अथवा जन-उभार जैसी कोई चेतना नहीं देखी गई थी। इसका कारण था उसकी निजी प्रतिभा एवं कूटनीतिज्ञ दक्षता। परन्तु उसके उत्तराधिकारी लुई 15वें तथा लुई 16वें में वह पराक्रम एवं योग्यता नहीं थी। फिर भी वे निरंकुशता के दावे को छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे।
- **आर्थिक कारक-** वस्तुतः क्रांति के लिए सबसे उपयुक्त स्थिति होती है एक दीर्घकाल की आर्थिक समृद्धि के पश्चात् अल्पकाल के लिए अवसान या अवनति का काल। फ्राँस में कुछ ऐसा ही देखा गया। 1730 से 1760 के दशकों में फ्राँस की अर्थव्यवस्था में विस्तार होता रहा तथा कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्र, दोनों में समृद्धि देखी गई। किंतु 1770 के दशक के अंत और 1780 के दशक में यूरोप में एक मंदी का दौर आरंभ हुआ, जिसका कारण था नई दुनिया (अमेरिका) से कीमती धातु का आगमन सीमित होना। इसका प्रभाव फ्राँस की अर्थव्यवस्था पर भी देखा गया। तभी 1788-89 में फ्राँस में फसल नष्ट होने जैसी घटना हुई, जिससे किसानों में और भी असंतोष व्याप्त हो गया।
- **फ्रांस की सामाजिक संरचना-** मध्यकालीन व्यवस्था के अनुकूल फ्रांस का समाज एक विभाजित समाज था तथा इस समाज का विभाजन विशेषाधिकारविहीन वर्ग एवं विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों के बीच था। विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों में प्रथम एस्टेट तथा द्वितीय एस्टेट के लोग शामिल थे। प्रथम एस्टेट का प्रतिनिधित्व पादरी वर्ग करता था, तो द्वितीय वर्ग का प्रतिनिधित्व कुलीन वर्ग। ये दोनों वर्ग सभी

प्रकार के कर से मुक्त थे तथा कई अन्य प्रकार के सामाजिक विशेषाधिकार का उपयोग करते थे। वहीं जनसामान्य तृतीय एस्टेट में शामिल थे तथा वे विशेषाधिकारविहीन थे। जनसामान्य समूह में फ्राँस के मध्य वर्ग अर्थात् पूंजीपति, विभिन्न पेशेवर समूह, किसान और श्रमिक सभी शामिल थे। करों का बोझ मुख्यत: तृतीय एस्टेट पर था। सबसे बड़ी विडंबना यह थी कि जहाँ पूंजीपति एवं विभिन्न पेशेवर समूह अपनी आर्थिक स्थिति में अनेक कुलीनों से ऊपर उठ चुके थे, वहीं सामाजिक दृष्टि से उनकी स्थिति अपने ही समूह के निर्धन लोगों जैसी थी। फ्रांस में आर्थिक रूप से प्रभावकारी और सामाजिक रूप से प्रभावकारी वर्ग के बीच यह विरोधाभास फ्रांस की क्रांति का एक महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुआ।

- **वैचारिक अथवा सांस्कृतिक कारक**– प्रबोधन का गहरा प्रभाव फ्राँस पर देखा गया था तथा पेरिस बौद्धिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया था। फ्रांस में सक्रिय चिन्तकों में वाल्टेयर, मॉन्टेस्क्यू, दिदरो, रूसो आदि प्रमुख थे। हालाँकि ये मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी थे, अत: ये शांतिपूर्ण परिवर्तन में विश्वास करते थे, क्रांति में नहीं। इनका बल सुधारों पर रहा था, उग्र परिवर्तन पर नहीं। परन्तु इन्होंने निम्नलिखित रूप में क्रान्ति को अप्रत्यक्ष प्रेरणा प्रदान की–

1. इन चिन्तकों ने अपने निबन्ध एवं लेखों के माध्यम से लोगों का ध्यान तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक समस्याओं की ओर खींचा।
2. इन्होंने कुछ ऐसे शब्द एवं मुहावरों को जन्म दिया जिनसे क्रान्तिकारियों को प्रेरणा मिली, यथा– विधि का शासन, नागरिक की अवधारणा आदि।
3. फिर, क्लब एवं कॉफी हाउस में उनके द्वारा जो बहस की जाती, उस कारण उनके विचारों का तेजी से प्रसार हुआ।

- गौरतलब है कि क्रांति के काल में कोई भी विचारक उपस्थित नहीं थे, न तो इनके द्वारा कोई राजनीतिक संगठन बनाया गया था और न ही इन्होंने अमेरिकी नेता बेंजामिन फ्रेंकलिन और टॉमस जैफरन की तरह क्रांति का नेतृत्व किया था। यही वजह है कि इन विचारकों की भूमिका को तात्कालिक परिस्थितियों से पृथक करके नहीं देखा जा सकता।
- **तात्कालिक परिस्थितियाँ**– सप्तवर्षीय युद्ध में भागीदारी एवं अमेरिकी क्रांति के समर्थन ने फ्राँस की अर्थव्यवस्था को संकटपूर्ण स्थिति में ला दिया था। अब सरकार के समक्ष एक ही समाधान था– कर के आधार को बढ़ाना। अर्थात् विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग को भी कर की परिधि में लिया जाना। इस मुद्दे पर वित्त विशेषज्ञ कोलोन ने कुलीनों से वार्ता करने का प्रयास किया, परंतु कुलीनों ने किसी प्रकार की रियायत देने से इंकार कर दिया। अंत में, फ्रांस की सरकार ने स्टेट्स जनरल की बैठक बुलाने की घोषणा की। वस्तुत: स्टेट्स जनरल ब्रिटिश पार्लियामेंट की तरह एक प्रतिनिधि संस्था रही थी, परंतु ब्रिटेन के शासकों के विपरीत फ्रांसीसी शासक अधिक निरंकुश रूप में शासन करना चाहते थे। लगभग 175 वर्षों के पश्चात् फ्रांसीसी राजतंत्र के द्वारा स्टेट्स जनरल की बैठक बुलाने की घोषणा का प्रतीकात्मक अर्थ था– फ्रांसीसी राजतंत्र का क्रांति की शक्तियों के समक्ष समर्पण। इसलिए जब मई, 1789 में स्टेट्स जनरल की बैठक आरंभ हुई, तो मतदान के मुद्दे पर मतभेद आरंभ हो गया। एक तरफ विशेषाधिकार प्राप्त वर्गों की माँग थी कि चैंबर के बहुमत के आधार पर निर्णय हो क्योंकि फिर वे बहुमत की स्थिति में आ जाते। दूसरी तरफ, जनसामान्य अथवा तृतीय एस्टेट की माँग थी कि तीनों चैंबर को मिलाकर बहुमत का निर्धारण किया जाए क्योंकि इस वर्ग की संख्या अधिक थी। किंतु इस मुद्दे पर कोई समझौता नहीं हो सका। अंत में वार्ता टूट गई और फिर मध्यवर्गीय प्रतिनिधियों ने स्टेट्स जनरल का बहिष्कार करते हुए सामने के एक टेनिस कोर्ट में सभा बुलाई। इसने अपने आप को नेशनल असेम्बली घोषित कर दिया। इस प्रकार क्रांति का आरंभ हो गया।

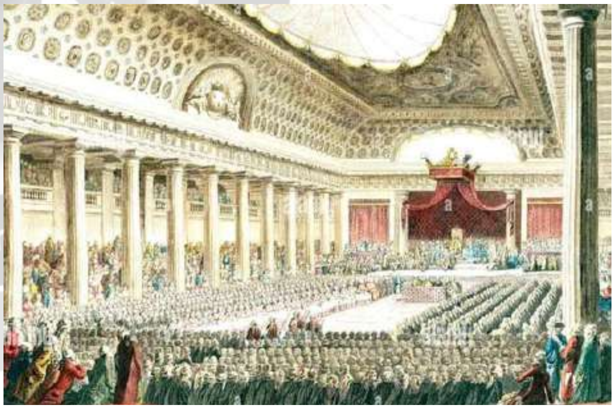

- इसे निम्न वर्ग का समर्थन प्राप्त हो गया। निम्न वर्ग में फ्राँस के किसान तथा पेरिस के दस्तकार (कारीगर) थे। इन्हें पेरिस की भीड़ (Mob of Paris) के नाम से जाना जाता है। परंतु निम्न वर्ग की उपस्थिति मध्यवर्गीय नेतृत्व के समक्ष एक बड़ी चुनौती थी क्योंकि दोनों के लक्ष्यों में स्पष्ट अंतर था। एक तरफ मध्यवर्ग, सीमित मताधिकार पर आधारित संवैधानिक राजतंत्र एवं राजनीतिक स्वतंत्रता चाहता था, वहीं निम्न वर्ग सार्वत्रिक मताधिकार के आधार पर प्रजातंत्र तथा आर्थिक एवं सामाजिक स्वतंत्रता चाहता था। इसलिए फ्रांस की क्रांति के दौरान मध्य वर्ग एक साथ दो मोर्चे पर लड़ रहा था। एक तरफ राज्य प्रदत्त विशेषाधिकारों को समाप्त करने के लिए राजतंत्र, कुलीन वर्ग और पादरी

वर्ग से लड़ रहा था, तो दूसरी तरफ वे अपने उन अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए निम्न वर्ग के साथ भी संघर्ष कर रहे थे। उनके इस दृष्टिकोण का दोहरापन क्रांति के मध्य प्रकट हुआ। फिर मध्यवर्ग और निम्न वर्ग के परस्पर संबंधों ने क्रांति के कई चरण निर्धारित कर दिए।

- **यह क्रांति यूरोप के अन्य क्षेत्रों में घटित न होकर, फ्राँस में क्यों घटित हुई?**

- ध्यातव्य है कि क्रान्ति उन्हीं देशों में हो सकती थी जहाँ शक्तिशाली मध्य वर्ग हो तथा विभिन्न वर्गों में गहरा असन्तोष हो और फिर वे व्यवस्था के विरूद्ध आपस में कोई गठबंधन बनाने के लिए तैयार हों। फिर, जैसा कि हम जानते हैं कि इस तरह की परिस्थितियाँ केवल फ्रांस में ही थी, पोलैंड एवं हंगरी में एक सशक्त मध्य वर्ग का अभाव था तथा नीदरलैंड में किसानों ने मध्यवर्ग के विरुद्ध प्रतिक्रान्तिकारियों का साथ दिया था। दूसरी तरफ, फ्राँसीसी मध्यवर्ग, यूरोप के अन्य देशों में रहने वाले अपने समकक्षों से इस बात में पृथक् था कि एक तरफ उसकी आर्थिक स्थिति कहीं बेहतर थी, वहीं उसकी सामाजिक स्थिति तृतीय एस्टेट्स के लोगों के समकक्ष थी। साथ ही, फ्राँस में लगभग सभी वर्गों का सरकार से मोहभंग हो चुका था।

क्रांति की प्रगति एवं स्वरूप (1789-1815)

प्रथम चरण- संवैधानिक राजतंत्र का चरण (1789-92)

- **वर्गीय समीकरण**- इस काल में क्रांति का नेतृत्व मध्यवर्ग के हाथों में रहा था, परंतु क्रांति पर निम्न वर्ग का दबाव भी बना हुआ था। इसलिए कहीं-कहीं क्रांति ने उग्र स्वरूप भी ग्रहण कर लिया था, किंतु अधिकांशत: यह मध्यवर्गीय हितों की सीमा में बंधकर ही चली। इसे संवैधानिक राजतंत्र का चरण माना जाता है। इसे निम्नलिखित रुप में समझा जा सकता है -

1. **वास्तील का पतन (14 जुलाई, 1789)**- वास्तील एक जेलखाना था। पेरिस की भीड़ ने उस पर आक्रमण कर कैदियों को छुड़ा लिया तथा हथियारों को भी लूट लिया। इसका प्रतीकात्मक अर्थ था कि राजतंत्रवादी निरंकुशता का पतन।

2. **सामंतवाद का अंत (4 अगस्त, 1789)**- एक राजनीतिक शक्ति के रूप में सामंतवाद का अंत पहले ही हो चुका था, परंतु आर्थिक और सामाजिक विशेषाधिकार के रूप में सामंतवाद अभी भी अस्तित्व में था। किंतु राष्ट्रीय सभा ने 4 अगस्त, 1789 को सामंतवाद का अंत कर दिया। सामंतवाद के अंत के पश्चात् फ्रांस, यूरोप में स्वतंत्र किसानों का प्रथम देश बन गया। परन्तु फ्रांस में सामंतवाद की समाप्ति के पश्चात् भी सामंतों का प्रभाव समाप्त नहीं हुआ। एक तरह से अगर देखा जाए तो उन्होंने अपने कुछ कम महत्वपूर्ण अधिकारों को गंवाकर अधिक महत्वपूर्ण अधिकारों को बचा लिया। दूसरे शब्दों में, फ्रांसीसी कुलीनों की संपत्ति का अधिकार बचा रहा।

3. **व्यक्ति एवं नागरिक अधिकारों की घोषणा (26 अगस्त, 1789)**- राष्ट्रीय सभा ने 26 अगस्त, 1789 को व्यक्ति एवं नागरिक अधिकारों की घोषणा की। यह अपने आप में बहुत बड़ा कदम था। यद्यपि यह कोई नई बात नहीं थी, इससे पूर्व ब्रिटिश मैग्नाकार्टा एवं अमेरिकी क्रांति में भी नागरिक अधिकारों की घोषणा की गई थी। फिर भी फ्राँस के क्रांतिकारियों की घोषणा अपने स्वरूप में अलग थी। यह रूसो की सामान्य इच्छा के सिद्धांत में अंतर्निहित जन-संप्रभुता की अवधारणा से प्रेरित थी तथा इसका प्रभाव कहीं अधिक व्यापक रहा। परन्तु इसमें जिन स्वतंत्रताओं की घोषणा हुई (अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, निजी संपत्ति का अधिकार, विधि के समक्ष समानता, मनमानी गिरफ्तारी से मुक्ति) वे मध्य वर्ग के हित में थे, निम्न वर्ग के हित में काम के अधिकार, भोजन के अधिकार तथा संघ एवं संगठन बनाने के अधिकारों को स्वीकृति नहीं दी गई। फिर, यह अधिकार केवल पुरुषों पर ही लागू था, महिलाओं पर नहीं।

4. **नये संविधान का निर्माण (1791)**- जैसा कि हम जानते हैं कि राष्ट्रीय सभा संविधान सभा के रूप में भी कार्य करती रही थी। फिर 2 वर्षों के प्रयत्न के पश्चात् 1791 में फ्रांस का नया संविधान बनकर तैयार हुआ। इस संविधान पर मध्यवर्गीय दृष्टिकोण का प्रभाव था। इसमें व्यक्ति की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए मॉन्टेस्क्यू की शक्ति के पृथक्करण की अवधारणा को अपनाया गया। मताधिकार को सीमित रखा गया और इसे संपत्ति की योग्यता से जोड़ दिया गया। इस नए संविधान में एक सदनीय व्यवस्थापिका का प्रावधान लाया गया। इसका नाम था 'नेशनल कन्वेंशन'। किंतु संविधान सभा ने एक निर्णय में भूल की। उसने यह प्रावधान किया कि जो संविधान सभा के सदस्य होंगे, वे नए संविधान के आधार पर गठित नेशनल कन्वेंशन के सदस्य नहीं होंगे। इस कारण से क्रांति ने उन तत्त्वों को, जो तत्त्व 1789 एवं 1791 के बीच संतुलन बनाए रखने के लिये उत्तरदायी रहे थे, खो दिया।

द्वितीय चरण- उग्र गणतंत्रवाद का चरण (1792-94)

- **नवीन वर्गीय समीकरण**- निम्नवर्ग ने मध्यवर्ग को बाहर कर क्रांति पर नियंत्रण स्थापित कर लिया क्योंकि मध्यवर्गीय नेतृत्व के द्वारा जो सुधार और परिवर्तन लाए गए थे उससे निम्न वर्ग संतुष्ट नहीं था। इस समय फ्राँस में सक्रिय दो रेडिकल पार्टियाँ, जिरोंदिस्त और जैकोबियन, फ्राँस में उग्र

परिवर्तन लागू करना चाहती थीं। जिरोंदिस्त जहाँ निम्न मध्य वर्ग प्रतिनिधित्व कर रहा था, वहीं जैकोबियन निम्न वर्ग का। जून, 1792 में असेंबली के इन रेडिकल सदस्यों ने एक दूसरी क्रांति के माध्यम से सत्ता पर नियंत्रण कर लिया तथा अगस्त, 1792 में एक नया संविधान लाया, जिसमें पहली बार सार्वत्रिक पुरुष मताधिकार का प्रावधान था। इन्हीं रेडिकल सदस्यों के द्वारा सितंबर, 1792 में राजा को बंदी बनाकर राजतंत्र को समाप्त कर दिया गया तथा फ्रांस को गणतंत्र घोषित कर दिया गया।

- **जैकोबियन सरकार की स्थापना**- आगे चलकर जिरोंदिस्त और जैकोबियन के बीच भी मतभेद हो गया। जिरोंदिस्तों का यह मानना था कि गणतंत्र की स्थापना के पश्चात् क्रांति का लक्ष्य पूरा हो गया, जबकि जैकोबियन इस क्रांति को और भी आगे ले जाना चाहते थे। (जैकोबियन धारीदार पज़ामा तथा लाल टोपी पहनते थे।) चूँकि जैकोबियन जिरोंदिस्तों की तुलना में कहीं अधिक संगठित थे, इसलिए उन्होंने जून, 1793 में पेरिस की भीड़ के सहयोग से विधानमंडल में जिरोंदिस्तों को खींच कर मार डाला। फिर वहाँ वह शासन व्यवस्था कायम हो गई जिसे जैकोबियन आतंक के नाम से जानते हैं।
- जैकोबियन शासन जून, 1793 से जून, 1794 तक कायम रहा। यह आधुनिक तानाशाही सरकार का प्रथम उदाहरण है। व्यवहार में यह एक व्यक्ति की तानाशाही बन गई क्योंकि जैकोबियन नेता रॉब्सपीयर ने दाँते, हरबर्ट आदि जैसे अपने अन्य साथियों को रास्ते से हटाकर अपने को सरकार के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में स्थापित कर दिया। इसका एक दुखद पहलू यह है कि यह तानाशाही सरकार रूसो की सामान्य इच्छा (कॉमन विल) की अवधारणा के तहत लायी गई थी।
- **जैकोबियन शासन की उपलब्धियाँ**- एक तरह से अगर देखा जाए तो इसने प्रजातांत्रिक एवं समाजवादी विचारों को गति दी तथा धर्मनिरपेक्षता को प्रोत्साहन दिया। सीमित मताधिकार को हटाकर इसने सार्वत्रिक पुरुष मताधिकार का प्रावधान लाया। इसने लोककल्याणकारी कार्यों पर बल दिया। इसके अंतर्गत इसने लोगों को काम के अधिकार एवं भोजन के अधिकार प्रदान किए। साथ ही, इसने शहरी श्रमिकों की सुविधा के लिए राशनिंग के आधार पर अनाज मुहैया कराने का प्रावधान लाया। इसके अतिरिक्त शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार, संपत्ति का अधिकार और साथ ही असंतोषजनक सरकार के विरुद्ध विद्रोह करने के अधिकार भी दिये गए थे। इसी शासन के अंतर्गत एक सैन्य अधिकारी कार्नो ने 'आम सैनिक भर्ती' की पद्धति लागू की। इससे एक नागरिक सेना की अवधारणा आई, जिसने सेना की समस्त संरचना को परिवर्तित कर दिया।
- **जैकोबियन शासन की सीमाएँ**- इसने क्रांति को एक भयावह चेहरा दिया। क्रांति के इस काल को 'आतंक का राज्य' भी कहा जाता है। इस काल में क्रांति उग्र एवं हिंसक हो गई और इसने अपने बच्चों को ही निगलना आरंभ कर दिया। निम्न वर्ग के प्रतिनिधित्व का दावा करने के बावजूद इस शासन काल के मध्य मारे जाने वाले अधिकतर लोग निम्न वर्ग से थे। अंत में, जून, 1794 में कुछ जैकोबियन सदस्यों ने ही मिलकर रॉब्सपीयर को रास्ते से हटा दिया। इसके साथ ही आतंक के शासन का अंत हो गया। इस घटना का प्रतीकात्मक अर्थ था फिर एक बार क्रांति का निम्न वर्ग के हाथों से निकलकर मध्यवर्ग के हाथों में आ जाना।

तीसरा चरण- उदार गणतंत्रवाद का चरण (1794-99)

- **वर्गीय समीकरण**- रॉब्सपीयर के पतन की घटना का प्रतीकात्मक अर्थ था कि फिर एक बार क्रांति का निम्न वर्ग के हाथों से निकलकर मध्यवर्ग के हाथों में आ जाना। इस समय निम्न वर्ग उतना संगठित नहीं था, उसमें आंतरिक फूट पड़ गई थी। वस्तुतः क्रांति के मध्य किसानों और पेरिस के दस्तकारों के बीच दरार पड़ गई क्योंकि रॉब्सपीयर की सरकार के द्वारा किसानों को कम कीमत पर अनाज बेचने के लिए दबाव डाला गया था, ताकि कारीगरों को यह कम कीमत पर मिल सके।
- **डायरेक्टरी शासन**- इस चरण में मध्यवर्ग ने अपने लक्ष्य के अनुरूप फिर सरकार के स्वरूप में परिवर्तन ला दिया। 1795 में फ्रांस का एक नया संविधान लाया गया। इसमें फिर एक बार सार्वत्रिक पुरुष मताधिकार को समाप्त कर सीमित मताधिकार को बहाल किया गया। साथ ही, एक सदन वाली व्यवस्थापिका की जगह दो सदनों वाली व्यवस्थापिका स्थापित की गई, ताकि विधानमंडल पर किसी एक पार्टी का वर्चस्व स्थापित न हो। उसी प्रकार, कार्यपालिका की शक्ति पांच डायरेक्टरों में निहित कर दी गई। यहाँ प्रयास यह था कि फ्रांस की राजनीति में राजनीतिक दल की भूमिका सीमित हो। परंतु राजनीतिक दल की भूमिका को सीमित करने का एक नकारात्मक परिणाम सामने आया, वह था व्यक्ति का महत्व बढ़ जाना तथा वह व्यक्ति था **नेपोलियन बोनापार्ट**।

चतुर्थ चरण- प्रजातंत्र के नाम पर तानाशाही और साम्राज्यवाद का चरण (1799-1814)

- जैसा कि हमने देखा कि 1794 के पश्चात् ही क्रांति मध्य वर्ग के हित में मुड़ चुकी थी। नेपोलियन भी मध्यवर्ग के

हित में ही काम कर रहा था। उसने 1799 में डायरेक्टरी के शासन का अंत कर दिया तथा फिर एक नया संविधान लाकर एक नई सरकार स्थापित कर दी। आगे 1804 ई. में गणतंत्र को समाप्त कर अपने को फ्राँस का सम्राट घोषित कर दिया। उसने जैकोबियन शासन के रेडिकल सुधारों को समाप्त किया और बड़ी चालाकी से क्रांति को स्वतंत्रता एवं समानता के लक्ष्य से पृथक् कर उसे राष्ट्रवाद एवं सैनिक गौरव के पक्ष में मोड़ दिया।

- **नेपोलियन का मूल्यांकनः-**

- **सबल पक्षः क्रांति का शिशु अथवा क्रांति से संबंध बनाए रखना-** 'नेपोलियन क्रांति का शिशु था' से तात्पर्य है कि क्रांति ने ही वे परिस्थितियाँ निर्मित की थीं जिनसे नेपोलियन का उद्भव संभव हुआ था। क्रांति ने प्रतिभा की प्रगति के लिए जो रास्ता तैयार किया, उसी का लाभ उठाकर नेपोलियन जैसा सामान्य व्यक्ति एक सैनिक अधिकारी के पद से फ्रांस के शासक के स्तर तक पहुँच गया। उसने क्रांति से अपना संबंध बनाए रखा तथा क्रांति के आदर्शों की रक्षा के नाम पर ही उसकी सरकार ने वैधता प्राप्त की। इतना तक कि जब उसने अपने को सम्राट घोषित कर दिया तो भी उसने जनमत संग्रह के माध्यम से अपने इस कदम का अनुमोदन लिया और यह घोषित किया कि अब गणतंत्र केवल एक व्यक्ति में निहित है। नेपोलियन के सुधारों ने भी क्रांति के साथ अपना संबंध बनाए रखा था तथा उसके विधि कोड (नेपोलियन कोड) में भी विधि के समक्ष समानता, धार्मिक स्वतंत्रता, संपत्ति के अधिकार आदि को स्वीकृति दी गई थी। उसने सामाजिक समानता के सिद्धांत को स्वीकार करते हुए जन्म आधारित विशेषाधिकार को नकार दिया। उसने प्रतिभा के आधार पर सरकारी सेवा में नियुक्ति पर बल दिया। उसकी कर प्रणाली भी क्रांति के आदर्शों के अनुकूल थी क्योंकि इसमें कर के वितरण का प्रावधान था। वित्तीय गतिविधियों को सुचारु बनाने के लिये उसने 'बैंक ऑफ फ्राँस' की स्थापना की। इसके अलावा, फ्राँस के बाहर यूरोप में भी उसे क्रांति के प्रतिनिधि के रूप में देखा गया।
- **निर्बल पक्षः क्रांति का शत्रु-** नेपोलियन ने क्रांति के कुछ महत्वपूर्ण आदर्शों को उलट दिया। उसने फ्रांस में गणतंत्र को समाप्त कर राजतंत्र स्थापित कर दिया। फिर उसने अपनी पैतृक परम्परा बूर्बों शासकों से जोड़ने का प्रयास किया। उसने लोगों की स्वतंत्रता को कुचल दिया। उसने जनमत का उपयोग अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए किया। फिर समानता को भी उसने अपने ढंग से परिभाषित किया। उसके लिये समानता का अर्थ अवसरों की समानता थी, न कि आर्थिक समानता। नेपोलियन कोड ने परिवार में महिलाओं को पुरूषों के अधीन कर दिया। जहाँ क्रांति का बल प्रत्यक्ष कर पर रहा था, वहीं नेपोलियन ने अप्रत्यक्ष कर पर बल दिया। उसी प्रकार, मुक्त अर्थव्यवस्था की जगह उसका बल वाणिज्यवादी नीति पर रहा था। उसने राजनीतिक दलों पर पाबन्दी लगायी। गुप्त पुलिस की सहायता से अपने विरोधियों का सफाया कर दिया, इसलिए भावी तानाशाहों के लिए नेपोलियन का शासन एक आदर्श मॉडल था। नेपोलियन ने फ्रांस की क्रांति को स्वतंत्रता एवं समानता के आदर्श से पृथक् कर सैनिक विजय एवं राष्ट्रीय गौरव की ओर मोड़ दिया।

क्रांति के विभिन्न चरणों में रेडिकल विचारों की स्थिति

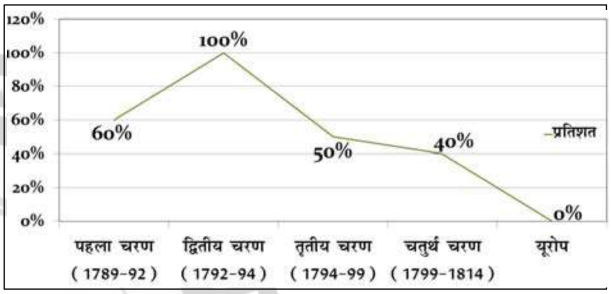

MAP 21.1 Napoleon's Empire at Its Height, 1812

- **विजय के बाद नेपोलियन ने यूरोप में राष्ट्रवाद को किस प्रकार प्रोत्साहित किया?**

- जिन क्षेत्रों में नेपोलियन का प्रसार हुआ, उन क्षेत्रों में क्रांति के आदर्श भी प्रसारित हुए। क्रांति के आदर्श ने नेपोलियन के साम्राज्य को वैधता प्रदान की थी। अपने विजित क्षेत्रों में उसने सामंतवाद को समाप्त किया, चर्च के साथ संबंधों को पुनर्स्थापित किया और नेपोलियन कोड को लागू किया। नेपोलियन के सुधारों ने यूरोपीय देशों में आंतरिक एकता लाकर राष्ट्रवाद के उद्भव का मार्ग प्रशस्त कर दिया। उसने इतालवी क्षेत्रों को पुनर्गठित किया तथा औपचारिक रूप से जर्मनी में पवित्र रोमन साम्राज्य को समाप्त कर जर्मन राज्यों को पुनर्गठित किया। इसने उन

क्षेत्रों के भावी एकीकरण की नींव डाल दी।

■ नेपोलियन ने नए यूरोप को पुराने यूरोप के साथ कैसे जोड़ा?

- जिस समय नेपोलियन का आगमन हुआ, उस समय फ्रांस उग्र परिवर्तनों से गुजर रहा था। फ्रांस में पुरातन व्यवस्था टूट कर बिखर चुकी थी, किंतु नवीन संस्थाओं की स्थापना नहीं हो सकी थी। फ्रांस के नागरिक भी क्रांति की हिंसक एवं उग्र छवि को नहीं भूल पाये थे। अत: उसने नवीन संस्थाओं का निर्माण करने का प्रयास किया, ताकि क्रांति से उत्पन्न शून्य को भरा जा सके। इसके लिए नेपोलियन के द्वारा निम्नलिखित कदम उठाए गए–

1. उसने क्रांति को रूसो के विचार से पृथक् कर मॉन्टेस्क्यू और वॉल्टेयर के विचारों की ओर मोड़ दिया।
2. उसने प्रशासनिक केन्द्रीकरण पर बल दिया। अत: प्रत्येक विभाग में प्रीफैक्ट तथा स्थानीय प्रशासन में उपप्रीफैक्ट जैसे अधिकारियों की नियुक्ति की।
3. उसने वर्गीय विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया, किंतु साथ ही लोगों की मूलभूत स्वतंत्रता को स्वीकृति नहीं दी।
4. सैद्धांतिक रूप में उसने समानता को स्वीकार किया, लेकिन समानता को अपने ढंग से परिभाषित किया। उसके लिए समानता का अर्थ था अवसरों की समानता, आर्थिक समानता नहीं।
5. जहाँ क्रांति ने स्वतंत्र व्यापार की नीति पर ज़ोर दिया, वहीं नेपोलियन ने वाणिज्यिक नीति पर बल दिया।
6. नेपोलियन ने अपनी राजनीतिक शक्ति को सुदृढ़ करने के लिए धर्म का उपयोग किया। जैसा कि हम जानते हैं कि क्रांति के मध्य लोगों ने चर्च की संपत्ति पर हमला कर उसे राज्य की संपत्ति में तब्दील कर दिया था, इसलिए रोम के पोप के साथ फ्रांस का संबंध-विच्छेद हो गया था। अत: नेपोलियन ने 1801 में पोप के साथ एक समझौता कर लिया। इसके आधार पर चर्च के कुछ अधिकार पुनर्स्थापित कर दिए गए। नेपोलियन का वास्तविक उद्देश्य धर्म का उपयोग कर अपनी राजनीतिक शक्ति को सुदृढ़ करना था।

- परंतु इस क्रम में नेपोलियन क्रांति के मूल आदर्शों से हटता चला गया। फ्रांस में गणतंत्र की जगह राजतंत्र स्थापित हो गया, सरकार की प्रतिनिध्यात्मक व्यवस्था समाप्त हो गयी, निजी स्वतंत्रता पर पाबंदी लगी जबकि समानता एवं बंधुत्व जैसे शब्दों ने अपने अर्थ खो दिए। इस प्रकार, क्रांति के साथ नेपालियन के बड़े ही जटिल संबंध थे।

■ नेपोलियन की महाद्वीपीय व्यवस्था

- अपनी साम्राज्यवादी सफलता की ऊँचाई पर पहुँचने के बावजूद नेपोलियन ब्रिटेन को नहीं हरा सका था। अत: टिल्सिट की संधि के पश्चात् नेपोलियन ने ब्रिटेन के विरूद्ध गहन आर्थिक नाकेबंदी करने का निर्णय लिया। इससे पूर्व 1806 में ही बर्लिन घोषणा में वह महाद्वीपीय व्यवस्था का प्रारूप ला चुका था। रूस के समर्थन के बाद इस योजना को और भी अधिक सफल होने की संभावना थी। इस योजना के अनुसार, यह आदेश जारी किया गया कि ब्रिटेन का कोई भी जहाज फ्रांस अथवा उसके मित्र राज्य के बंदरगाह पर लंगर नहीं डाल सकता। नेपोलियन की योजना के दो उद्‌देश्य थे– प्रथम, ब्रिटेन के निर्यात को ठप करना। दूसरे, यूरोपीय बाजार से ब्रिटिश वस्तुओं को फ्रांसीसी वस्तुओं से विस्थापित करना। बदले में ब्रिटेन ने आर्थिक प्रतिक्रिया दिखाई तथा उसने अन्य देशों से आयात रोक दिया। नेपोलियन की योजना की सफलता दो बातों पर निर्भर थी। पहली, फ्रांस के पास ऐसी सक्षम नौसेना हो, जो तस्करी को रोक सके। दूसरी, फ्रांस का औद्योगिक उत्पादन का आधार इतना मजबूत हो कि वह ब्रिटिश वस्तुओं के अभाव की क्षतिपूर्ति कर सके। किंतु ऐसा संभव नहीं हुआ तथा यूरोप में उपभोक्ता वस्तुओं की बड़ी कमी हो गयी। इसने जन असंतोष तथा जन आंदोलन को जन्म दिया। इस जन आंदोलन का फायदा उठाकर यूरोपीय शासकों ने नेपोलियन के विरूद्ध एक संगठन कायम कर लिया। अत: महाद्वीपीय व्यवस्था एक ऐसी दोधारी तलवार सिद्ध हुई, जिसने ब्रिटेन की तुलना में फ्रांस को अधिक क्षतिग्रस्त कर दिया।

■ नेपोलियन के पतन के क्या कारण थे?

- फ्राँसीसी क्रांति के आदर्शों और नेपोलियन के साम्राज्य की वास्तविकता के बीच विद्यमान विरोधाभास एवं नेपोलियन द्वारा की गई कुछ नीतिगत भूल के कारण नेपोलियन के साम्राज्य का पतन हुआ।

नेपोलियन के साम्राज्यवाद का अन्तर्विरोध–

1. नेपोलियन यूरोप में क्रान्ति का अग्रदूत बनकर आया था। अत: यूरोप के मध्यवर्ग ने उसका स्वागत किया था, परन्तु शीघ्र ही नेपोलियन की साम्राज्यवादी नीति प्रकट होने लगी तथा फ्रांस की क्रांति के आदर्शों, जैसे-समानता, स्वतंत्रता एवं नागरिक अधिकारों और नेपोलियन के साम्राज्यवाद के बीच का अन्तर्विरोध प्रकट हो गया। फिर यूरोपीय मध्य वर्ग ने नेपोलियन को अस्वीकार कर दिया।
2. फ्रांस एवं नेपोलियन की सफलता का बड़ा कारण रहा था नागरिक सेना की अवधारणा। किन्तु आगे अन्य यूरोपीय देशों ने इस अवधारणा को अपना लिया जिससे नेपोलियन की विशिष्टता जाती रही।

निर्णय की भूल–

1. नेपोलियन की महाद्वीपीय व्यवस्था ने ब्रिटेन से अधिक स्वयं फ्रांस को क्षतिग्रस्त कर दिया। यूरोप में उपभोक्ता

वस्तुओं की बड़ी कमी हो गयी। इसने जन असंतोष तथा जन आंदोलन को जन्म दिया। इस जन आंदोलन का फायदा उठाकर यूरोपीय शासकों ने नेपोलियन के विरूद्ध एक संगठन कायम कर लिया।

2. **मास्को अभियान**- मास्को अभियान उसकी एक रणनीतिक भूल सिद्ध हुआ। वस्तुतः 1812 ई. में नेपोलियन बोनापार्ट ने मास्को अभियान किया। इसका कारण रूस द्वारा महाद्वीपीय व्यवस्था का उल्लघंन था। किंतु जार ने रणनीतिक कुशलता का परिचय देते हुए अपनी सेना को लेकर साइबेरिया में शरण ले ली। नेपोलियन मॉस्को में आत्मसमर्पण का इंतजार करता रहा। इसी दौरान ठंड, महामारी व भूख के कारण उसकी सेना को व्यापक क्षति हुई। यह अभियान सिद्ध करता है कि इस काल तक नेपोलियन एक तर्कसंगत निर्णय लेने की स्थिति में नहीं था। वह पूरब के इतने विनाशक अभियान पर निकल गया था, जबकि पश्चिम में उसका सबसे बड़ा प्रतिद्वंद्वी ब्रिटेन अभी भी अविजित था।

प्रश्नः 'नेपोलियन यूरोप में क्रांति का अग्रदूत था।' इस कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (150 शब्द)

उत्तरः नेपोलियन का फ्रांस की क्रांति से दोहरा संबंध रहा। एक तरफ वह क्रांति के राजदूत के रूप में यूरोप में उपस्थित हुआ, वहीं दूसरी तरफ आगे वह स्वतंत्रता के शत्रु के रूप में यूरोप से बाहर खदेड़ा गया।

जब नेपोलियन फ्रांस से बाहर निकलकर यूरोप पहुँचा, तो उसे एक सिंहासनारूढ़ जैकोबियन (क्रांतिकारी) के रूप में पहचाना गया। यूरोप के किसान नेपोलियन की ओर उम्मीद भरी नज़रों से देख रहे थे। उसी प्रकार, यूरोपीय मध्य वर्ग उसे उद्धारक के रूप में देख रहा था। उसकी दृष्टि में नेपोलियन स्वतंत्रता तथा नागरिक अधिकारों का जीवंत रूप था। फिर नेपोलियन जहाँ भी गया, वहाँ उसने सामंतवाद का अंत किया, चर्च को नियंत्रित किया तथा नेपोलियन कोड को लागू कर दिया। नेपोलियन के इन सुधारों से लोगों में नये उत्साह का संचार हुआ।

किंतु शीघ्र ही फ्रांस की क्रांति के आदर्श तथा नेपोलियन के साम्राज्यवाद की सच्चाई के बीच का विरोधाभास सामने आने लगा तथा फिर यूरोप की जनता ने नेपोलियन को अस्वीकार कर दिया। नेपोलियन ने विभिन्न क्षेत्रों में संसाधनों का दोहन किया तथा अपनी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए संबंधित क्षेत्र से बड़ी संख्या में सैनिकों की बहाली की। अब यूरोपीय लोग उसके शासन की सच्चाई को समझने लगे। फिर स्पेन के जन विद्रोह ने उसके अंत की शुरूआत कर दी तथा यूरोपीय शासकों ने इस जनविद्रोह का लाभ उठाकर नेपोलियन को पराजित कर दिया। इस तरह फ्रांस की क्रांति का अग्रदूत नेपोलियन, यूरोपीय लोगों की श्रद्धा एवं घृणा दोनों का पात्र बना।

■ फ्रांस की क्रांति का महत्त्व एवं विरासत

- फ्रांस की क्रान्ति ने तात्कालिक रूप में फ्रांस एवं यूरोप को परिवर्तित किया, परन्तु दीर्घकालीन स्तर पर इसने विश्व इतिहास की दिशा ही बदल दी।

1. उदारवादी विचारधारा अर्थात् प्रतिनिध्यात्मक सरकार, मानव तथा व्यक्ति के अधिकारों को मान्यता प्रदान की।
2. फ्राँस की क्रांति की संभवतः सबसे प्रमुख देन है- राजनीति में जनभागीदारी को प्रोत्साहन। इसने राजनीति के स्वरूप को ही बदल दिया।
3. इसने आधुनिक राष्ट्रवाद की अवधारणा रखी, जो जनता की शक्ति पर आधारित था। इसके परिणामस्वरूप इटली और जर्मनी का एकीकरण संभव हुआ।
4. इसने गणतंत्रवादी एव प्रजातंत्र के विचारों को भी प्रोत्साहन दिया।
5. जैकोबियन शासन के काल में समाजवाद के तत्व या समाजवादी विचारधारा को भी प्रोत्साहन मिला।
6. फ्रांस की क्रान्ति के विचारों से तात्कालिक रूप में लैटिन अमेरिकी उपनिवेशों में स्वतंत्रता आंदोलन को बल मिला।
7. आगे एशिया महाद्वीप पर भी उसका प्रभाव देखा गया, उदाहरण के लिए, टीपू सुल्तान, राजा राममोहन राय के व्यक्तित्व पर भी फ्रांस की क्रांति के विचारों का प्रभाव था।

■ फ्रांस की क्रांति की सीमाएँ

- इसकी शुरुआत स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्श वाक्य के साथ हुई थी, लेकिन यह लोकतांत्रिक आदर्शों को लागू करने से बहुत दूर रही क्योंकि इसने सार्वत्रिक मताधिकार की जगह सीमित मताधिकार को लागू किया।
- 26 अगस्त, 1789 को पुरुषों और नागरिकों के अधिकारों की घोषणा हुई, किंतु महिलाओं को इससे वंचित रखा गया तथा वर्ष 1946 तक आकर ही सार्वत्रिक वयस्क मताधिकार को स्वीकृति मिली।
- इस क्रांति के मध्य मध्यवर्ग और निम्न वर्ग के बीच संबंधों का प्रश्न अनुत्तरित रहा, आगे रूस की क्रांति ने इसका उत्तर देने का प्रयास किया।

प्रश्नः- स्पष्ट कीजिए कि अमरीकी एवं फ्रांसीसी क्रांतियों ने आधुनिक विश्व की आधारशिलाएँ किस प्रकार निर्मित की थीं। (*UPSC-2019*, 250 शब्द)

*(**प्रश्न विश्लेषणः** इस प्रश्न में निम्नलिखित 'Key-words' हैं- 'अमेरिकी क्रांति', 'फ्रांस की क्रांति', 'आधुनिक विश्व', 'आधारशिला' 'स्पष्ट कीजिए'। जाहिर है कि प्रश्न 'Hypothetical' है। इस प्रश्न में आपको केवल सहमति के बिंदु दर्शाने होंगे। इसमें अमेरिकी क्रांति तथा फ्रांस की क्रांति को पृथक-पृथक देखने के बजाय*

संयुक्त रूप में देखने की जरूरत है तथा उनमें आधुनिकता के समान बिंदु को खोज कर निकालना है। चूँकि 'विश्व' शब्द का भी प्रयोग हुआ है इसलिए पश्चिमी विश्व से बाहर भी इसके प्रभाव की ओर संकेत करना है।)

उत्तर: अमेरिकी क्रांति एवं फ्रांस की क्रांति ने यूरोप के आधुनिकीकरण की उस प्रक्रिया को लगभग पूरा कर दिया जो पुनर्जागरण एवं प्रबोधन के साथ आरंभ हुई थी। एक दृष्टि से ये क्रांतियाँ प्रबोधन के विचारों का क्रियान्वयन थी। फिर इसके द्वारा लाये गए बदलावों ने न केवल यूरोप पर, अपितु अन्य महाद्वीपों पर भी अपना प्रभाव छोड़ा।

अमेरिकी क्रांति एवं फ्रांस की क्रांति के द्वारा आरंभ किया गया आधुनिकीकरण राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक विविध क्षेत्रों में व्यक्त हुआ। राजनीतिक क्षेत्र में इसकी अभिव्यक्ति जनभागीदारी के आरंभ तथा गणतंत्रवादी एवं प्रजातांत्रिक विचारों के प्रभाव के रूप में देखी गयी। अमेरिकी क्रांति के पश्चात् एक लिखित संविधान के आधार पर संयुक्त राज्य अमेरिका गणतंत्र के रूप में स्थापित हो गया। पहली बार 'जनगण' ने मिलकर एक आधुनिक राष्ट्र का गठन किया। फ्रांस की क्रांति उसकी अगली कड़ी थी। क्रांति के पश्चात् फ्रांस एक गणतंत्र के रूप में स्थापित हुआ तथा फिर इसने उदारवाद, राष्ट्रवाद, समाजवाद एवं प्रजातंत्र जैसी आधुनिक विचारधारा को बल प्रदान किया। इसने न केवल फ्रांस में, अपितु यूरोप के अन्य क्षेत्रों में भी सामंतवाद का खात्मा कर दिया।

आर्थिक क्षेत्र में पूँजीवाद एक नए आर्थिक मॉडल के रूप में विकसित होकर आया। सामाजिक क्षेत्र में पूँजीवाद के पूरक के रूप में व्यक्तिवाद उभरकर आया। इसने व्यक्ति एवं मानव के मूलभूत अधिकारों की मांग उठाई। फ्रांस की क्रांति के मध्य पुरुष एवं मानव अधिकारों की घोषणा हुई। सबसे बढ़कर अमेरिकी संविधान ने व्यक्ति के मौलिक अधिकारों को स्वीकृति प्रदान की।

आगे 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में इन विचारों का प्रभाव लैटिन अमेरिका के स्वतंत्रता आन्दोलन पर देखा गया तथा 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत, चीन एवं जापान जैसे एशियाई देशों पर भी देखा गया।

इस प्रकार, उपर्युक्त परिवर्तन आधुनिकीकरण की दिशा में एक बड़ा परिवर्तन था।

प्रश्नः- फ्रांस की क्रांति ने, जितनी इससे अपेक्षा की गई थी, बहुत कम पाया। इस कथन के प्रकाश में फ्रांस की क्रांति का मूल्यांकन कीजिए।

*(**प्रश्न विश्लेषण :** उत्तर लेखन से पूर्व प्रश्न को ध्यानपूर्वक पढ़ते हुए 'Key words' का चयन कीजिए। इस प्रश्न में 'Keywords' हैं - 'क्रांति', 'जितनी इससे अपेक्षा', 'उतना नहीं पाया', 'कथन के प्रकाश में'। इस प्रश्न में आपका मार्ग स्पष्ट कर दिया गया है। अर्थात् चूंकि 'इस कथन के प्रकाश में' है अतः हमें इस वक्तव्य को सिद्ध करना है।)*

उत्तर: फ्रांस की क्रांति विश्व इतिहास में एक विभाजक रेखा बन कर आई। इसने पुरातन व्यवस्था को सशक्त चुनौती दी। फिर भी क्रांति के द्वारा किए गए वायदों एवं वास्तविक उपलब्धियों के बीच एक खाई बनी रही।

इसने सामंतवाद के अंत की घोषणा की। अतः फ्रांस स्वतंत्र किसानों का देश बन गया। फिर रूसो की जनसंप्रभुता की अवधारणा से प्रेरित होकर व्यक्ति एवं नागरिक अधिकारों की जो घोषणा की गई थी, वह फ्रांस एवं यूरोप को एक नए युग में ले जाने की सूचक थी। उसी तरह, चर्च को राज्य के अधीन लाकर धर्मनिरपेक्षता की नीति को प्रोत्साहन दिया गया।

किंतु आगे क्रांति अपनी मूल दिशा से पृथक होती चली गई। रूसो की जनसंप्रभुता की अवधारणा की अवहेलना करते हुए फ्रांस ने संविधान में वयस्क सार्वत्रिक मताधिकार को न अपनाकर सीमित मताधिकार को लागू किया। फिर जैकोबियन शासन के अंतर्गत क्रांति उग्र एवं हिंसक हो गई तथा इसने अपने ही बच्चों को निगलना आरंभ कर दिया। सबसे बढ़कर नेपोलियन के अंतर्गत एक बार फिर सम्राट के पद को पुनर्जीवित कर दिया गया।

अतः ऐसा मानना अतिशयोक्ति नहीं है कि फ्रांस की क्रांति से जितनी अपेक्षा की गई थी, उससे बहुत कम पाया।

प्रश्न- फ्रांस की क्रांति ने फ्रांस के साथ-साथ यूरोप को भी परिवर्तित कर दिया। परीक्षण कीजिए।

प्रश्न विश्लेषण- *यह प्रश्न अपने स्वरूप में 'Hypothetical' है। कुल मिलाकर इस कथन को सिद्ध करना है। इसके Key Words हैं 'फ्रांस', यूरोप', 'परिवर्तित किया', 'परीक्षण कीजिए'। उचित तर्क एवं उदाहरण से इसे सिद्ध करना है।*

उत्तर- फ्रांस की क्रांति का भौगोलिक प्रसार, तीव्रता तथा व्यापकता बहुत प्रभावकारी सिद्ध हुई। इसके माध्यम से फ्रांस के साथ-साथ यूरोप का भी मध्ययुग से आधुनिक युग में रूपान्तरण संभव हुआ।

फ्रांस में यह क्रांति पुरातन व्यवस्था की विनाशक बन गयी। इस क्रांति के मध्य राजतंत्र को नष्ट कर गणतंत्र स्थापित हुआ, सामंतवाद का अन्त हुआ तथा पुरुष एवं नागरिक अधिकारों की घोषणा हुई। इस प्रकार नवीन विचारधारा तथा संस्थागत विकास में फ्रांस, यूरोप से कहीं आगे निकल गया।

इसकी तार्किक परिणति फ्रांस एवं यूरोप के बीच एक युद्ध के रूप में हुई क्योंकि क्रांति की उग्र विचारधारा यूरोप में भी पुरातन व्यवस्था को डराने लगी थी। फिर, यही युद्ध यूरोप में क्रांति का वाहक बन गया। नेपोलियन के अन्तर्गत फ्रांस की

KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

सेना जिन क्षेत्रों में गई वहाँ सामंतवाद का अन्त किया, चर्च को नियंत्रित किया तथा नेपोलियन कोड को लागू कर दिया। अतः फ्रांस की क्रांति यूरोपीय क्रांति में परिवर्तित हो गई। आगे इसका प्रभाव अन्य महाद्वीपों पर भी देखा गया।

इस प्रकार फ्रांस की क्रांति ने फ्रांस तथा यूरोप दोनों को परिवर्त्तित किया।

Food for Thought

- फ्रांस की क्रांति, अमेरिकी क्रांति की तुलना में अधिक रेडिकल क्यों सिद्ध हुई?
- फ्रांस की क्रांति के मध्य निम्नवर्ग का प्रभावी होने का क्या कारण था?
- तमाम प्रयासों के बावजूद भी निम्नवर्ग क्रांति पर अपना वर्चस्व स्थापित करने में क्यों विफल हुआ?
- फ्रांस की क्रांति ने यूरोपीय क्रांति का रूप क्यों ले लिया तथा इसने यूरोप पर क्या प्रभाव डाला?
- नेपोलियन बोनापार्ट ने क्रांति के अग्रदूत के रूप में काम किया अथवा विनाशक के रूप में?

■■■

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR